DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

भक्ति काल

Part -4

LIVE 13-06-2024 09:00 AM

कुम्भनदास

कुम्भनदास परमानन्द के समकालीन थे।

- इनका कोई ग्रन्थ न तो प्रसिद्ध है और न अब तक मिला है। इनके फुटकल पद अवश्य मिलते हैं।

- ये, धन, मान-मर्यादा की इच्छा से कोसों दूर थे ।

जैसे-

सन्तन को कहा सीकरी सो काम
आवत मुख पहनियाँ टूटी, बिसरि गयो हरि नाम ।।
जिनको मुख देखे दुःख उपजत, तिनको करिब परी सलाम।
कुम्भनदास लाल गिरिधर बिनु और सबै बेकाम ॥

"तुम नीके दुहि जानत गैया ।
चलिए कुँवर रसिक मनमोहन लागौं तिहारे पैयाँ ।
तुमहिं जानि करि कनक दोहनी घर तें पढ़ई मैया ।
निकटहि है यह खरिक हमारो, नागर लेहुँ बलैया ।
देखियत परम सुदेस लरिकई चित चहुँट्यो सुन्दरैया ||
कुम्भनदास प्रभु मानि लई रति गिरि- गोबरधन रैया ||

चतुर्भुजदास

ये कुम्भन दास जी के पुत्र और गोसाई 'विट्ठलनाथ' जी के शिष्य थे।

- इनकी भाषा चलती और सुव्यवस्थित है।
- इनके तीन ग्रन्थ मिलते हैं।

1. द्वादशयश
2. भक्तिप्रताप
3. हितजू को मंगल

इनके अतिरिक्त फुटकल पदों के संग्रह भी इधर-उधर पाए जाते हैं। जैसे-

जसोदा ! कहा कहौं हौं बात ।
तुम्हरे सुत के करतब मो पै कहत कहे नहिं जात।।
भाजन फोरि, ढारि सब गोरस, लै माखन दधि खातं ।।
जौ बरजौ तौ आँखि दिखावै रचहु नाहिं सकात
और अटपटि कहँ लौ बरनौं धुवत पानि सों गात ।
दान चतुर्भुज गिरिधर गुन हैं कहति - कहति सकुचात ।।

छीतस्वामी

- 'विट्ठलनाथ' जी के शिष्य और 'अष्टछाप' के अन्तर्गत थे।
- पहले ये मथुरा के एक सुसम्पन्न पण्डा थे और राजा बीरबल इनके जजमान थे।
- इनके पदों में शृंगार के अतिरिक्त ब्रजभूमि के प्रति प्रेम व्यंजना भी पाई जाती है।

'हे विधना तोसों अँचरा पसारि माँगौं ।
जनम-जनम दीजौ यही ब्रज बसिबो ||

"भोर भए नवकुंज सदन ते, आवत लाल गोवर्द्धन धारी ।
लटपट पाग मरगजी माला, सिथिल अंग डगमग गति न्यारी ।
बिनुगुन माल बिराजति उर पर, नखछत द्वैज - चन्द अनुहारी ।
छीतस्वामी जब चिताए मो तन, तब हौ निरखि गई बलिहारी ।।"

गोविन्द स्वामी

- ये अन्तरी के रहने वाले सनाढ्य ब्राह्मण थे।
- ये गोवर्द्धन पर्वत पर रहते थे।
- इनका रचनाकाल संवत् 1600 से 1625 माना जाता है।
- ये कवि होने के अतिरिक्त बड़े पक्के गवैये थे।
- तानसेन कभी - कभी इनका गीत सुनने के लिए आया करते थे ।

नन्ददास

• ये सूरदास जी के प्राय: समकालीन थे और इनकी गणना अष्टछाप में है । इनका कविता काल सूरदास जी की मृत्यु के पीछे संवत् 1625 में या उसके आगे तक माना जा सकता है।

• गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के पुत्र 'गोकुलनाथ जी' के नाम से जो 'दो सौ बावन वैष्णवो की वार्ता लिखी गई उसमें इनका जीवन वृत्त दिया गया है।

• इनका काव्य सृजन अत्यन्त सरस और मधुर है।

• नन्ददास जी के सम्बन्ध में यह कहावत प्रसिद्ध है कि 'और कवि गढ़िया, नन्ददास जड़िया।

• इनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक 'रासपंचाध्यायी' है, जो 'रोला छन्दो' में लिखी गई है ।

रासपंचाध्यायी के अतिरिक्त इन्होंने ये पुस्तके लिखी हैं-

- भागवत दशम स्कन्ध
- सिद्धान्त पंचाध्यायी
- मानमंजरी
- नामचिन्तामणि माला
- दानलीला
- अनेकार्थमंजरी
- श्यामसगाई
- सुदामाचरित
- नासिकेतपुराण (गद्य)
- रूक्मिणी मंगल
- रूपमंजरी
- विरहमंजरी
- अनेकार्थनाम माला
- मानलीला
- ज्ञानमंजरी
- भ्रमरंगीत
- हितोपदेश

इनकी कुछ प्रमुख पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

"ताही छिन उड्डुराज उदित रस-रास सहायक।
कुमकुम - मण्डित - बदन प्रिया जनु नागरि नायक ॥

(रास पंचाध्यायी)

"कहन स्याम सन्देश एक मैं तुम पै आयी ।
कहन सयम संकेत कहूँ अवसर नहिं पायो ॥

(भ्रमरगीत)

जौ उनके गुन होय, वेद क्यों नेत बखानै ।
निरगुन सगुन आतमा रुचि ऊपर सुख सानै ॥
जौ उनके गुन नाहिं और गुन भए कहाँ ते ।
बीज बिना तरू जमै मोहिं तुम कहौं कहाँ ते ॥

कृष्णदास

ये भी वल्लभाचर्य के शिष्य और अष्टछाप में थे। ये शूद्र थे, पर आचार्य जी के बड़े 'कृपापात्र' और मन्दिर के प्रधान मुखिया हो गए थे।

- चौरासी वैष्णवों की वार्ता में इनका जीवन वृत्त दिया हुआ है।
- जुगलमान चरित्र नामक इनका एक छोटा-सा ग्रन्थ मिलता है। जैसे-

तरनि तऩया तट आवत है प्रात समय,
कंदुक खेलत दख्यो आनन्द को कँदवा ।
नूपुर पद कुनित, पीताम्बर, कटि बाँधे,
लाल उपरना, सिर मोरन के चंदवा ||
कंचन मनि मरकत रस ओपी ।
नंदसुवन के संगम सुखकर अधिक विराजति गोपी ।।

परमानन्ददास

- यह भी 'वल्लभाचार्य' जी के शिष्य और अष्टछाप में थे। इनका निवास स्थान कन्नौज था।
- इनका एकमात्र ग्रन्थ परमानन्द सागर है, जिसमें 835 पद हैं।

जैसे-

कहा करौ बैकुण्ठहि जाय ?
जहँ नहिं नन्द, जहाँ न जसोदा नहिं जहँ गोपी ग्वाल न गाय।
जहाँ नहिं जल जमुना को निर्मल और नहीं कदमन की छाँया ।

परमानन्द प्रभु चतुरं ग्वालिनी, ब्रजरज तजि मेरी जाय बलाय ।।
राधे जू हारावलि टूटी।
उरज कमलदल माल मरगजी, बाम कपोल अलक लट छूटी।
बर उर उरज करज बिच अंकित, बाहु जुगल बलयावति फूटी ।।
कंचुकि चीर विविध रंग रंजित, गिरधर अधरं माधुरी घूँटी ।।
आलस बलित नैन अनियारे, अरुन उनींदे रजनी खूटी।
परमानन्द प्रभु सुरति समय रस मदन नृपति की सेना लूटी ||

हितहरिवंश

- राधाबल्लभी सम्प्रदाय के प्रवर्तक 'गोसाई हितहरिवंश' का जन्म संवत् 1559 मथुरा के बाद बादगाँव में हुआ था ।
- इनके पिता का नाम केशवदास मिश्र और माता का नाम तारावती था।
- ये माध्वानुपायी गोपाल भट्ट के शिष्य थे। पीछे इन्हें स्वप्न में राधिका जी ने मन्त्र दिया और उन्होंने अपना एक अलग सम्प्रदाय चलाया।

- हितहरिवंश जी के चार पुत्र और एक कन्या हुई । पुत्रों के नाम वनचन्द्र, कृष्णचन्द्र, गोपीनाथ और मोहनलाल थे।

- इन्होंने 'हित चौरासी' नाम से एक प्रसिद्ध ग्रन्थ का सृजन किया। इसमें 84 पद हैं, हित चौरासी के अतिरिक्त इनकी फुटकल बानी भी मिलती है, जिसमें सिद्धान्त सम्बन्धी पद हैं। जैसे-

" रहो कोउ काहू मनहिं दिए।
मेरे प्राननाथ श्री स्यामा सपथ करौ तिन छिए ।।
जो अवतार कदम्ब भजत हैं धरि दृढ़ व्रत जु हिए।
तेऊ उमगि तजत मर्यादा बन बिहार रस पिए ।।
खोए रतन फिरत जो घर-घर कौन काज इमि जिए ।
हित हरिबंस अनत सच नाहिं बिन या रसहिं पिए । ।

(सिद्धान्त सम्बन्धी कुछ फुटकर पद)

"ब्रज नव तरुनि कदम्ब मुकुटमनि स्यामा आजु बानी ।
नख - सिख लौं अँग- अँग माधुरी मोहे स्याम धनी ।।

(हित चौरासी)

गदाधर भट्ट

ये चैतन्य महाप्रभु के शिष्य थे। यह गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रमुख भक्त कवियों में गिने जाते हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि ये महाप्रभु चैतन्य को भागवत की कथा सुनाया करते थे। इसी आधार पर इनका समय महाप्रभु चैतन्य के समय (वि.सं. 1542 से वि.सं. 1590) के आस-पास अनुमानित किया जा सकता है। चैतन्य महाप्रभु और षट्गोस्वामियों के सम्पर्क के कारण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इनका कविता काल वि.सं. 1880 से 1600 के कुछ बाद तक अनुमानित किया है। भट्ट जी दक्षिणात्य ब्राह्मण थे। ये संस्कृत के दिग्गज विद्वान थे। इसी कारण इनके ब्रजभषा के पदों में संस्कृत शब्दों की प्रचुरता है इनका ब्रजभाषा पर पूर्ण

अधिकार था और वृन्दावन आने के पूर्व ही ये ब्रजभाषा में पदों की रचना किया करते थे। ऐसा प्रचलित है कि ये गोस्वामी की प्रेरणा से वृन्दावन आए

और महाप्रभु चैतन्य का शिष्यत्व ग्रहण किया। साधुओं से गदाधर भट्ट के द्वारा रचित निम्न पूर्वानुराग के पद को सुनकर जीव गोस्वामी मुग्ध हो गए।

भट्ट जी की अभी तक रचनाओं में केवल स्फुट पद ही प्राप्त हैं। इनके स्फुट पद गदाधर की वाणी नामक पुस्तक में संकलित हैं। इसके प्रकाशक बाबा कृष्णदास हैं। इन स्फुट पदों का विषय विविध है। इनमें भक्त का दैन्य, वात्सल्य, बधाई, (राधा और कृष्ण) यमुना - स्मृति और राधा-कृष्ण की विविध लीलाओं का वर्णन है।

1. सखी हाँ स्याम रंग रंगी।
देखि बिकायं गई वह मूरति, सूरत माहिं पगी ।।

2. झूलति नागरि नागर लाल
मन्द मन्द सब सखी झुलावति, गावति गीत रसाल ।।

3. जयति श्री राधिके, सकल - सुख साधिके,
तरुन मनि नित्य नव तन किसोरी ||

स्वामी हरिदास

इनका जन्म 1490 ई. में हुआ था। ये भक्त, कवि, शास्त्रीय संगीतकार तथा कृष्णोपासक सखी सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे। इन्हें ललिता सखी का अवतार माना जाता है। वे वैष्णव भक्त थे तथा उच्च कोटि के संगीतज्ञ भी थे। ये प्राचीन शास्त्रीय संगीत के अद्‌भूत विद्वान् एवं चतुष् धुपशैली के रचयिता हैं । प्रसिद्ध गायक तानसेन इनके शिष्य थे। अकबर इनके दर्शन करके वृन्दावन गए थे। 'केलिमाल' में इनके सौ से अधिक पद संग्रहित हैं। इनकी वाणी सरस और भावुक है।

ज्यौं ही त्यौंही तुम राखत हौं, त्यों ही रहियत हौं, हे हरि !
और अपरचे पाय धरौं सुतौं कहौं कौन के पैड भरि ।।

सूरदास मदनमोहन

'सूरदास मदनमोहन' अकबर के समय में संडीले के अमीन थे । जाति के ब्राह्मण और गौड़ीय सम्प्रदाय के वैष्णव थे। इनका रचना काल 1590 और 1600 के बीच बताया जाता है। इनके सन्दर्भ में कहा जाता है कि एक बार संडीले तहसील की मालगुजारी के कई लाख रूपए सरकारी खजाने में आए थे। उन्होंने सबका साधुओं को खिला पिला दिया और शाही खजाने में कंकड़ पत्थरों से सन्दूक भेज दिए जिनके भीतर कागज के चिट यह लिखकर रख दिए-

तेरह लाख संडीले आए, सब साधुन मिलि गटेक।
सूरदास मदनमोहन आधी रातहिं सटेक ॥